International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)

लेखिकाओं के उपन्यास में नारी

डॉ विशु मेघनानी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी – विभाग, सिन्दरी कॉलेज, सिन्दरी, धनबाद।

Article Info
Page Number : 830-833

Publication Issue :
Volume V, Issue IV
July-Aug 2010

Article History
Accepted : 10 July 2010
Published : 30 July 2010

साहित्य समाज का दपर्ण है। प्रत्येक देश कला के परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य के स्वरूप मे भी परिवर्तन होता है। साहित्य लेखन सदैव जनसमुदाय की भावनाओं के आधार पर ही होता है। समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए साहित्य को ही अपना विषय बनाया है। साहित्य मूलतः संवेदनाहीन और चेतनाशून्य समाज को जगाने का सार्थक प्रयास किया है। वेदः–वेदांत से लेकर आजतक सभी समाज के पितृ सत्तावादी समाज की दृष्टि ने उसे साहित्य की सभी विधाओं को केन्द्र में लाकर खड़ा कर दिया। हिन्दी उपन्यास और स्त्री जीवन का गहरा संबंध है। जैसे–जैसे हिन्दी उपन्यासों का विकास होता गया स्त्री जीवन के संघर्ष के आयाम खुलते गये। इन्ही आयामों को लेकर स्त्री संघर्ष, स्त्री चेतना एवं स्त्री विमर्श आदि उत्पन्न हुआ, जो स्त्रियों को अपने अधिकारों के लिए सचेत होने की प्रकिया का सार्थक पहलू है। इस सार्थक पहलू का सकारात्मक पक्ष स्त्री जागरण है, जो स्त्री जीवन के विभिन्न आयामों में परिवर्तन के रूप में नहीं वरन् अधिकारिक समता की माँग है। हिन्दी के प्रारम्भिक उपन्यासों में स्त्री की पहचान एक गृहस्थ नारी के चित्रण के रूप में होती थी, जिसमे स्त्री शिक्षा को प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से बल दिया गया है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में स्त्री जीवन की एक सार्थक पहल होती है। इन उपन्यासों में स्त्री सामाजिक स्त्रीवादी जड़ता के प्रति विद्रोह ही नहीं करती बल्कि स्त्री चेतना के विकास के लिए संघर्षरत जीवन भी जीती है।

इस समय के उपन्यासों में स्त्री के आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के कारण स्त्री–पुरुष के संबंधों का टूटना एवं बिखरना भी चित्रित हुआ है। स्त्री शिक्षा के कारण पुरूषों के दबाव के प्रति विद्रोह का प्रयास के साथ देह पर स्वयं का अधिकार की चेतना भी जागृत हुई है। महिला उपन्यासकारों ने हिन्दी कथा साहित्य में एक अलग आयाम प्रस्तुत किया है। पुरुषों द्वारा लिखित उपन्यासों में स्त्री–विमर्श, स्त्री–चेतना आदि की तलाश आलोचकों द्वारा होती रही है। उनमें उपन्यासों में स्त्री के प्रति सहानुभुति थी, आत्मानुभुति नहीं। वर्जीनिया वुल्क ने लिखा है– ''स्त्री का लेखन स्त्री का ही होता है। स्त्रीवादी होने से बच नहीं सकता है। अपने सर्वोत्तम में वह स्त्रीवादी ही होगा।''

स्त्रीयों द्वारा लिखे गये स्त्री–विमर्श के संदर्भ में ''पचपन खम्भे लाल दीवारे'' हिन्दी का पहला उपन्यास है। उषा प्रियंवदा का पचपन खम्भे लाल दीवारें उपन्यास सीमित आय वाले मध्यवर्गीय परिवार की बड़ी बेटी सुषमा के अनव्याहे रह जाने की समस्या को उठाया है। जो इस बिन्दु पर गहरे त्रासद संदर्भों के साथ उठा है, कि शिक्षित होने और कालेज की अपनी नौकरी के

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

चलते समूचे परिवार के भरण–पोषण की जिम्मेदारी निभाने के नाते, माँ–बाप को अपने इसी रूप में वह स्वीकार्य है यानि उसके विवाह चिंता उन्हें नहीं है। उनकी निगाहों में उसके जीवन के बजाय उसके भाई बहनों की जिंदगियाँ है। ढलती जवानी में नील नामक युवक के भावनात्मक और फिर शारीरिक संबंध बनते हैं, परंतु सुषमा जानती है कि दोनों के बीच उम्र का जो अंतराल है, वह उसके वैवाहिक संबंध को स्थायी नहीं रहने देगा और समाज भी इस विवाह को मान्यता प्रदान नहीं करेगा। इसलिए वह नील की जिंदगी से अलग हो जाती है। अकेलापन ही उसकी नियति बनता है। सुषमा, नील से कहती है– ''मेरी जिंदगी खत्म हो चुकी है, मैं केवल साधन हूँ। मेरी भावना का कोई स्थान नहीं। मैंने अपने को ऐसी जिंदगी के लिए ढाल लिया है। तुम चले जाओगे तो मैं फिर अपने को उन्हीं प्राचारों में बंद कर लूँगी। ''पचपन खम्भे लाल दीवारें'' का हॉस्टल वस्तुतः अपनी सारी बाहरी भव्यता के बावजूद मृत रूढ़ियों, त्रासद बंधनों और मान्यताओं का प्रतीक है। वहीं उषा प्रियंवदा का ''रुकोगी नहीं राधिका'' उपन्यास याचिका राधिका के अंतहीन भटकाव की कहानी कहता है, जो अपने विधुर पिता के अपने ही उम्र लड़की से विवाह करने के नाते, हम उम्र से सामंजस्य बिठा नहीं पाती। वह स्वयं अनुभव करती है कि उसे जैसे एक लंबी अंधेरी, सर्द सुरंग में एक लक्ष्यहीन और अन्तहीन यात्रा की नियति मिल गई है। अनिश्चित भविष्य के अलावा कुछ भी उसे नहीं मिल पाया।

''बेतवा बहती रही'' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा एक गरीब परिवार में जन्म लेने वाली एवं कम पढ़ी–लिखी उर्वशी की जीवन गाथा का चित्रण करती है। उर्वशी का विधवा होना एवं बरजोर सिहं से विवाह होना उसके जीवन संघर्ष की गाथा है। बरजोर सिंह उर्वशी की सखी का बाप है और उसके पिता की उम्र का है। उर्वशी अपने दूध मुँहे बच्चे को अपने जेठ के संरक्षक में छोड़कर आयी थी। उस बच्चे के लिए उसके मन मे एक हूक बनी रहती है। वह लाश बनकर जीवित रहती है। विद्रोह एवं शोषण को सहती रहती है। केवल वह तभी विद्रोह करती है, जब बरजोर सिंह अपने बड़े बेटे विजय की मृत्यु के बाद पैसे के लोभ मे अपने दूसरे बेटे उदय की शादी बिना उसकी मर्जी के मनमाना दहेज लेकर करना चाहते है तब वह कहती है– ''उदय की शादी के लिए जो लोग आए है, पैसा वाले है। अपनी विटिया के लिए आसानी से उदय जैसा वर खोज लेंगे, लेकिन हमारे विजय की बहू, कहाँ जायेगी? उसे कौन ब्याहने आयेगा? तुमने कबहूँ सोची ये बात।'' फिर वह उदय की सहमति से उसका व्याह विजय की विधवा से करा देती है। इस कारण बरजोर सिंह उसे वैद्य से मिलाकर दवा के बहाने जहर दिलवा देता है। जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है और उसे बेतवा नदी के किनारे दफन कर दिया जाता है। उसकी अनुगूँज बेतवा नदी की अनुगूँज बन जाती है।

मैत्रेयी पुष्पा अपने उपन्यासों में मन्नु भंडारी की तरह समाज के विभिन्न अनुशासनों और विषयों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करती है, लेकिन जिस मुद्दे पर उनकी दृष्टि गई है वह है नारी। इदन्नमम उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने मंदा के जीवन संघर्ष के माध्यम से नारी–जीवन के संघर्ष को दिखलाया है। मंदा स्वप्नदर्शी महेन्दर सिंह नेता की बेटी है। उनकी राजनीतिक हत्या के बाद मंदा उनके सपनो को साकार करने का संकल्प लेती है। कच्ची उम्र में ही उसके साथ बलात्कार होता है किन्तु उसके मन में किसी भी प्रकार का अपराध बोध नहीं है। मकरन्द उसका प्रेमी है, किन्तु उससे उसका ब्याह नहीं हो पाता है। मकरन्द का प्रेम ही उसकी शक्ति है। वह सामूहिक संघर्ष मे विश्वास रखने के कारण मजदूरों को उनकी मेहनत का महत्व एवं मूल्य समझाती है और आगे बढ़कर अभिलाष सिंह जैसे शक्तिशाली ठेकेदार को चुनौती भी देती है उसके तेवर को लेखिका ने इन शब्दों से व्यक्त किया है कि ''बऊ की नसों में तनाव आ गया और आंखों से चिंगारियाँ झरने लगी। आग लगे वा अभिलाख की

जीभ को! वैसे जोसर लला, तुम कौन से कम हो? तुम्हारी भी पाप की गठरिया बहौत भारी है। तुलसिन दिन–रात दे रही है तुम्हें! मोड़ी मर ही गई वा की।''

चाक उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने अलीगढ़ जिले के अंतरपुर गाँव के नारी–जीवन का उल्लेख किया है। इस उपन्यास की सभी स्त्री पात्र पुरूषों की तुलना में अधिक सशक्त विकासशील और विस्फोटक दिखाई देती है। वे वैयक्तिक स्तर पर ही नही सामाजिक स्तर पर भी मूल्यों और रीतियों से जूझने का प्रयास करती हैं। विशेषकर जहां उन्हें एक व्यक्ति या नारी का स्थान और अधिकार प्राप्त नहीं होता। कथा नायिका सारंग गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त कर चुकी है, अतः उसे वर्तमान सामाजिक ढाँचे के अन्तर्गत स्त्री और पुरूष में विभाजक रेखा खीचने वाले दुहरे मानदण्ड से चिढ़ है। पति रंजीत एवं प्रेमी श्रीधर को लेकर उसके मन की कसमसाहट स्पष्ट दिखाई देती है। इस उपन्यास में स्त्री जीवन की पीड़ा की अभिव्यक्ति भी बहुत है जैसे ''मैं नहीं जानती थी कि मेरी माँ रात में उठकर ठंडे पानी से क्यों नहाती है? सभी दृष्टियों पर विचार करने के बाद डॉ० रामचन्द्र तिवारी लिखते हैं– ''लेखिका ने अपनी सम्पूर्ण रचनात्मक प्रतिभा का उपयोग इसी नारी शक्ति को जगाने में किया है।''

प्रभा खेतान का ''पीली आँधी'' उपन्यास अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रभा खेतान ने ताई और सोमा के चरित्र के माध्यम से समाज में नारी संघर्ष को परिभाषित किया है। जहाँ विपरीत परिस्थितियों में परिवार की सारी मर्यादाओं का निर्वाह करते हुए अपने निजी दर्द को सीने में दबाए हुए ताई व्यापारिक लेन–देन के साथ ही पूरी व्यवस्था का दायित्व इस साहस और खूबी से निभाती है कि परिवार के पुरुष सदस्य भी उसके सामने बौने प्रतीत होते है, वहीं सोमा का संकल्प और साहस उदीयमान नारी शक्ति की ओर संकेत करता है। लेकिन समाज की जड़ता स्त्री को गढ़ने की प्रवृत्ति का पक्षपाती है। वह आज भी स्वर्ग–नर्क के आधार पर अपने आलोचना–कर्म को जीवित रखे हुए है। लेखिका एक स्थान पर लिखती है– ''मासूमियत के कारण भूल हो सकती है। समाज की नजरों में सोमा ने गलती की, लेकिन क्या यह उसका अपराध था? घोरतम अपराध, गुरुतम अपराध? उसको स्वर्ग नहीं मिलेगा। सती–स्त्री स्वर्ग जाती है, मगर कुल्टा?'' यह सामाजिक विचारधारा है लेकिन वास्तविकता है कि वह सुजीत को प्यार करती है, जिसे अपने पति को साहस के साथ बतला भी देती है।

कठगुलाब उपन्यास पुरुष प्रधान समाज में नारी के दोहने, शोषण एवं मुक्ति संघर्ष की गाथा है। इसमें स्मिता, मारियान, नर्मदा, असीमा ये चार नारी पात्र अपनी कहानी व्यक्त करते है, पुरुष पात्र के केवल एक ही नायक के रूप में उपस्थित है–विपिन इस उपन्यास से यह स्पष्ट होता है कि पुरब हो या पश्चिम हो, नारी सर्वत्र दोहन और शोषण का शिकार है। कथा लेखिका की नारी पात्र पुरूष से सम्पूर्ण मुक्ति नहीं चाहती। वे सम्मान के साथ अपनी पहचान कायम रखते हुए प्रेम, सुरक्षा और संतान की कामना करती हैं। स्त्री–जीवन की विडम्बना का जिक्र करते हुए मृदुलाजी लिखती है– ''पुरुष का क्या है, हरामी किसी भी उम्र में पिता बन सकता है। पर औरत? जरा देर हुई नहीं कि माँ बन पाने की अवधि समाप्त।'' इस तरह मृदुला जी ने तमाम प्रश्न स्त्री–जीवन को लेकर उठाये हैं।

मन्नु भंडारी के बहुचर्चित उपन्यास ''आपका बंटी है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने बदलते रिश्तों के कारण टूटते दाम्पत्य जीवन को शकुन और अजय के द्वारा चित्रित किया है। साथ ही साथ रिश्तों को बचाये रखने की आवश्यकता को भी इस उपन्यास द्वारा व्यक्त किया है। पति–पत्नि के संबंध में प्रेम और विश्वास का महत्तवपूर्ण स्थान होता है। समाज में स्त्री का सामाजिक हैसियत पति के पद या प्रतिष्ठा के अनुसार होती है। शकुन एक सशक्त प्रतिक्रियावादी नारी है। लेकिन पति–पत्नि

के टूटते हुये दाम्पत्य के बीच में इकलौता पुत्र बंटी निस्सहाय हो जाता है। दाम्पत्य जीवन के विघटन शकुन और अजय को तलाक तक पहुँचाता है। ''तुम केवल बंटी की माँ की तरह मत जियो, शकुन की तरह जीयो।'' अजय से तलाक के पश्चात् बहुत प्रत्याशा में शकुन दो बच्चों के पिता विधुर डॉ. जोशी से विवाह करती है। अपने घर, अपने लोग को छोड़कर वह बेटा बंटी को लेकर डॉ. जोशी के घर आ जाती है। लेकिन बंटी न तो जोशी के घर को अपना घर समझा पाया और न ही उन्हें पापा समझा सका। घर के एक कोने पर भी वह अपना अधिकार न जता पाता। डॉ. जोशी के घर में रहनेवाली शकुन उसकी मम्मी नहीं रह जाती। वस्तुतः शकुन न तो अजय की पत्नि बन सकी न ही बंटी की माँ।

शकुन तो अजय के लिए डोमिनेंटिंग थी वह जोशी के प्रति एकदम समर्पित और आश्रित लगती है। अजय शकुन से अलग होकर दूसरा विवाह तो किया। और वह एक बच्चे का पिता भी बनता है, किन्तु शकुन अजय से मुक्त होने पर भी द्वंद में जी रही है। अकेलेपन की पीड़ा सहती है। अकेलेपन की भावना के कारण वह अपने आप को असुरक्षित महसूस करती है। बंटी के लिए मम्मी सब कुछ होती है लेकिन यह बच्चा जोशी के लिए बाधा बन जाता है। शकुन में गरिमामय मातृत्व का पद खंड–खंड हो जाता है। आपका बंटी एक परिवार की यानि एक नारी की समस्या का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। शकुन और अजय जो दूसरे से मुक्त हो जाते है लेकिन बंटी संवेदना और सहानुभुति का केंन्द्र है। बंटी का बचपन कई मानसिक द्वंदों एवं व्यथाओं से व्यतीत हो जाता है।

इस तरह यह कहा जा सकता है कि महिला उपन्यासकारों ने स्त्री–जीवन, स्त्री–विमर्श, स्त्री–चेतना एवं स्त्री संघर्ष की व्यापक पृष्ठभूमि का चित्रण किया है, जिसमें स्त्री को सजग होने एवं करने की अनंत संभावनाएँ भी है। इन महिला उपन्यासकारों ने आदिवासी, अनूसूचित जाति, जनताति से लेकर निम्न वर्गीय, मध्यवर्गीय एवं उच्च वर्गीय तीनों तरह के परिवारों को लेकर स्त्रियों का चित्रण किया है। अतः इन उपन्यासो का देखते हुए हम कह सकते है कि स्त्री लेखन को पुरूषों के लेखन से कमतर नहीं आँका जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास–बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास–गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. हिन्दी का गद्य–साहित्य – डॉ रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. उषा प्रियंवदा–पचपन खंभे लाल दिवारे।
5. आपका बंटी – मन्नु भण्डारी।
6. इदन्नमम–मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. चाक–मैत्रीय पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. पीली आँधी–प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
9. हिन्दी उपन्यास का इतिहास–गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. कठगुलाब–मृदुला गर्ग, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली।